राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

संस्कृत भाषा व इसका विशाल साहित्य आज के युग में भी पूर्ण प्रासंगिक –राज्यपाल

पटना, 28 नवम्बर 2019

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री फागू चौहान ने कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के सप्तम वार्षिक दीक्षांत समारोह के अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों को उच्चतर शिक्षा की उपाधि से अलंकृत करते हुए उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। उन्होंने कहा कि दरभंगा में उन्हें दुबारा आने का अवसर प्राप्त हुआ है। दरभंगा अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत सहित देवभाषा संस्कृत की भी शिक्षा–स्थली के रूप में सुप्रसिद्ध रही है।

महामहिम राज्यपाल ने कहा कि आदिकाल से ही संस्कृत भाषा एवं साहित्य से चरित्र–शिक्षा, शांति, सद्भाव एवं विश्वबन्धुत्व का पाठ हमने सीखा है। वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, पुराणों एवं धर्मशास्त्रों ने जीवन–यापन का एक ऐसा आदर्श मार्ग स्थापित किया है, जिस पर चलकर मानवता का व्यापक कल्याण हो सकता है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य के ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति और ज्ञान–सम्पदा से परिचित नहीं हुआ जा सकता। संस्कृत के ज्ञान के अभाव में हम न तो भारत की सांस्कृतिक सम्पन्नता और विपुल ज्ञान–संपदा से परिचित हो पाएँगे और न ही अपने राष्ट्र की भावनात्मक एकता को सुरक्षित रख पाएँगे।

राज्यपाल ने कहा कि दुनियाँ के अनेक भाषा–वैज्ञानिकों की स्पष्ट मान्यता है कि तकनीकी विकास के युग में भी पूरे विश्व में कम्प्यूटर के दृष्टिकोण से भी संस्कृत सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। आज आवश्यक है कि हम तकनीकी मानदंडों पर भी खरी उतरने वाली संस्कृत भाषा के और अधिक विकास का मार्ग–प्रशस्त करें। आज भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता को सशक्त करने के लिए यह जरूरी है कि पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोनेवाली संस्कृत भाषा की समग्र प्रगति हेतु सार्थक प्रयास किए जायें। आज संस्कृत की बहुमूल्य पांडुलिपियों के संरक्षण तथा उनके डिजिटाईजेशन की नितांत आवश्यकता है।

महामहिम ने कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में जिस विश्वग्राम की परिकल्पना की गई है, दरअसल इस अवधारणा के मूल में भी भारतीय चिन्तन और दर्शन की महान परम्परा है। भारतीय संस्कृति में पूरी दुनियाँ के लोगों को अपने परिवार के ही सदस्य की भाँति समझने की मान्यता है – वसुधैव कुटुम्बकम्।'' यह अवधारणा इस बात पर आधारित है कि हम परोपकार को सबसे बड़ा पुण्य और प्रताड़ना को सबसे बड़ा पाप या अधर्म मानते हैं। हमारा राष्ट्रप्रेम विश्वबंधुत्व की राह में बाधक नहीं, बल्कि साधक है और ये सारी विरासतें हमें संस्कृत भाषा और साहित्य के माध्यम से प्राप्त होती हैं।

राज्यपाल ने कहा कि वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया में भी संस्कृत की अपार ज्ञान–समृद्धि का बहुत महत्व रहा है। असाध्य रोगों में भी आयुर्वेद चिकित्सा–पद्धति की उपयोगिता और सफलता, आर्यभट्ट द्वारा शून्य की खोज, अणु और परमाणु की परिकल्पना, शल्य–चिकित्सा के जनक रूप में सुश्रुत की प्रसिद्धि – ये सभी बातें संस्कृत की महान परम्परा और विरासत का परिचय देती हैं। जगद्गुरू के रूप में भारत की पुनः प्रतिष्ठा हेतु संस्कृत का विकास अनिवार्य है। यह समय की माँग भी है और भारतीय सांस्कृतिक नव–जागरण हेतु एक गौरवशाली सार्थक अभियान भी। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह की अपूर्व दानशीलता एवं उनके संस्कृत शिक्षा–प्रेम का ज्वलंत उदाहरण है।

पृष्ठ...2 पर

महामहिम राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृत भाषा तथा इसका विशाल साहित्य आज के युग में भी पूर्ण प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व के ज्ञान एवं विज्ञान के सम्पूर्ण विषय संस्कृत साहित्य में सुरक्षित हैं। संस्कृत के वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रंथ, एक ओर जहाँ वैज्ञानिकों को नई खोज में सहायता करने में सक्षम हैं, वहीं परवर्ती साहित्य – सर्जना में भी इनका अमूल्य योगदान है। भारत की एकता एवं अखंडता को कायम रखने वाली सद्विचार इस भाषा एवं साहित्य में सर्वत्र विद्यमान हैं, जिनके बल पर विश्व में शांतिदूत के रूप में अपनी पहचान को और अधिक प्रखर और सशक्त बना सकते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि काशी के साथ–साथ मिथिला की धरती भी संस्कृत–शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रही है। मुझे विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय भारत की एकता, अखंडता, सामाजिक संस्कृति और सामाजिक समरसता को विकसित करता हुआ, संस्कृत भाषा व साहित्य की समृद्धि के महा अभियान में एक अपूर्व भूमिका निभायेगा। पिछले दिनों संस्कृत शिक्षा के विकास में राजभवन ने भी पहल की थी। इस विश्वविद्यालय के संयोजन में राजभवन में शास्त्रार्थ सभा का भव्य आयोजन किया गया था। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय राजभवन के निदेशों का तत्परतापूर्वक पालन करता है, यह प्रशंसनीय है। छात्रसंघ चुनाव, कक्षाओं में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु बायोमैट्रिक उपकरणों के संस्थापन एवं कुशलतापूर्वक संचालन आदि बातों पर भी सख्ती से अमल होना चाहिए। परीक्षाओं का कदाचारमुक्त और पारदर्शितापूर्वक आयोजित होना तथा समय पर परीक्षाफल प्रकाशित होना भी अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह विश्वविद्यालय कुलपति के नेतृत्व में संस्कृत भाषा एवं साहित्य के एक उत्कृष्ट अध्ययन–केन्द्र के रूप में पूरे देश में अपनी एक अनूठी पहचान बनाएगा।

राज्यपाल ने कहा कि उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों के लिए आज का दिन उनके जीवन का स्वर्णिम अवसर है, क्योंकि आज उन्हें अपनी साधना और परिश्रम का मधुर फल प्राप्त हुआ है। आज का दिन न केवल छात्र–छात्राओं के लिए, अपितु उनके माता–पिता, अभिभावकों एवं गुरूजनों के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से अर्जित ज्ञान का उपयोग अपने जीवन के साथ–साथ सम्पूर्ण मानवता के व्यापक कल्याण के लिए करेंगे। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति द्वारा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृति विश्वविद्यालय के 07वें दीक्षांत समारोह में विद्यावारिधिः (Ph.D) एवं आचार्य (M.A), वर्ष 2019 की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र/छात्राओं को मेडल एवं उपाधि देकर अलंकृत किया गया। इसके साथ ही महामहिम के कर–कमलों से आचार्य परीक्षा, 2019 के विभिन्न संकायों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं को स्वर्ण पदक एवं उपाधि प्रदान किया गया। इसके साथ ही ज्योतिष शास्त्र, दर्शन शास्त्र, धर्म शास्त्र, वेद शास्त्र, साहित्य भाषा विज्ञान में भी विद्यावारिधिः (Ph.D) सहित दो लोगों को विद्यावाचस्पति (D. Litt) की उपाधि से अलकृत किया गया। इसके उपरांत महामहिम द्वारा द्वीप प्रज्जवलित करके सभा की विधिवत् उद्घाटन किया गया।

समारोह में महामहिम के अनुमति से कुलपति प्रो. सर्वनारायण झा द्वारा संस्कृत विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलपति प्रो॰ परमेश्वर नारायण शास्त्री ने भी अपना विचार व्यक्त किया।

इस अवसर पर महामहिम के कर–कमलों द्वारा संस्कृत विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायो के भवन निर्माण कार्य का भी शिलान्यास किया गया।

.....